मध्यप्रदेश राज्य सेवा मुख्य परीक्षा

सामान्य अध्ययन वर्ष 1998

प्रथम प्रश्न–पत्र

1. निम्नलिखित छः प्रश्न खण्डों में से किन्हीं चार पर, प्रत्येक पर लगभग 150 शब्दों में, संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिये।

   (अ) भारतीय संविधान के नीति निदेशक सिद्धांत

   (ब) राष्ट्रीय गान (नेशनल एन्थेम)

   (स) क्रिप्स मिशन, 1942

   (द) महात्मा गांधी का नमक सत्याग्रह

   (इ) ओसामा बिन लादेन

   (फ) तात्या टोपे।

2. निम्नलिखित छः प्रश्न खण्डों में से किन्हीं चार पर, प्रत्येक पर लगभग 150 शब्दों में, संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिये।

   (अ) आर्य समाज

   (ब) थियोसॉफिकल सोसायटी

   (स) भारतीय अर्थ व्यवस्था में कृषि का महत्व

   (द) टिकट संग्रह (फिलेटली)

   (इ) भारतीय राष्ट्रीय फौज का मुकदमा (ट्रायल ऑफ इण्डियन नेषनल आर्मी)

   (फ) नोबल पुरस्कार।

3. (अ) भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताएँ क्या है? विस्तार में बताइये।

   अथवा

   (ब) भारतीय संविधान में लोक सेवा आयोगों से संबंधित प्रावधानों का सविस्तार वर्णन कीजिए।

4. (अ) किन विशेष लक्षणों के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था को कम विकसित (अण्डर डेवलप्ड)

माना जाता है? विवेचना कीजिए।

अथवा

(ब) जीवित प्राणियों के सामान्य लक्षणों का विवेचन कीजिए।

5. (अ) वातावरण प्रदूषण का क्या अर्थ है? इसके कारणों का उल्लेख कीजिए।

अथवा

(ब) प्रो. अमर्त्य सेन क्यों विख्यात है? इनके आर्थिक विचारों का उल्लेख कीजिए।

मध्यप्रदेश राज्य सेवा मुख्य परीक्षा

सामान्य अध्ययन वर्ष 1998

द्वितीय प्रश्न–पत्र

भाग–1

1. 1956 में मध्यप्रदेश राज्य के गठन का वर्णन कीजिए।

अथवा

मध्यप्रदेश में वर्षा की स्थिति का उल्लेख कीजिए।

अथवा

मध्यप्रदेश के मुख्य पर्वतों का उल्लेख कीजिए।

2. मध्यप्रदेश की जनसंख्या की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

मध्यप्रदेश की श्रम–शक्ति की स्थिति का वर्णन कीजिए।

अथवा

मध्यप्रदेश से संबंधित निम्न आंकड़े बताइये।

(क) स्त्री जनसंख्या (ख) जनसंख्या का घनत्व (ग) कुल साक्षरता प्रतिशत

(घ) कुल भौगोलिक क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर में) (ड.) कुल नगरीय जनसंख्या

3. ''मध्यप्रदेश में कोयला'' विषय पर संक्षिप्त विवरण लिखिए।

अथवा

नर्मदा नदी पर एक टीप लिखिए।

अथवा

मध्यप्रदेश के प्रमुख खनिज पदार्थों का उल्लेख कीजिए।

4. मध्यप्रदेश के वनों का उल्लेख कीजिए।

अथवा

मध्यप्रदेश के ऐसे प्रमुख उद्योगों का विवरण लिखिए जो खनिजों पर आधारित है।

अथवा

मध्यप्रदेश में सिंचाई के साधनों का उल्लेख करते हुए चंबल घाटी सिंचाई परियोजना का संक्षिप्त विवरण लिखिए।

5. मध्यप्रदेश के पंचायत चुनावों पर प्रकाश डालिये।

अथवा

मध्यप्रदेश की विधानसभा व उसके लिए 1998 में हुए चुनावों पर प्रकाश डालिये।

अथवा

मध्यप्रदेश के गठन के समय इसमें कितने जिले थे? तब से कितने नये जिले और गठित किये गये? नये जिलों के नाम बताईये। इस विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

भाग–2

6. लोक कवि ईसुरी पर एक टीप लिखिए।

अथवा

लोक कवि घाघ पर एक टीप लिखिए।

अथवा

सन्त कवि सिंगाजी पर एक टीप लिखिए।

7. खजुराहो के मंदिरों पर एक टीप लिखिए।

अथवा

मध्यप्रदेश शासन द्वारा स्थापित कबीर सम्मान पर एक टीप लिखिए।

अथवा

मध्यप्रदेश शासन द्वारा स्थापित सम्मानों पर टीप लिखिए।

8. बैंगा जनजाति की विशेषताओं का विवरण लिखिए।

अथवा

भील जनजाति की विशेषताओं का विवरण लिखिए।

अथवा

कोल जनजाति की विशेषताओं का विवरण लिखिए।

9. करमा लोक नृत्य पर एक टीप लिखिए।

अथवा

भगोरिया लोक नृत्य पर एक टीप लिखिए।

अथवा

बस्तर के लौह शिल्प पर एक टीप लिखिए।

10. मध्यप्रदेश के मुख्य मंत्रियों का क्रमवार उल्लेख कीजिए।

अथवा

मध्यप्रदेश के महाकाव्य युग पर प्रकाश डालिये।

अथवा

मध्यप्रदेश के कुछ प्रमुख पर्यटन स्थलों का उल्लेख कीजिए।

मध्यप्रदेश राज्य सेवा मुख्य परीक्षा

सामान्य अध्ययन वर्ष 1998

तृतीय प्रश्न–पत्र

1. निम्नलिखित वाक्यों की अधिकतम सौ–सौ शब्दों में व्याख्या कीजिए:

(अ) अत्याचार का दमन और क्लेष का शमन करते हुए चित्त में जो उल्लास और तुष्टि होती है वही लोकोपकारी कर्मवीर का सच्चा सुख है।

(ब) संस्कृति मनुष्य की विविध साधनाओं की सर्वोत्तम परिणति है।

(स) अभावमयी लघुता में मनुष्य अपने को महत्वपूर्ण दिखाने का अभिनय न करे तो क्या अच्छा नहीं है?

(द) नर और नारी जन्म लेते और मरते है, परंतु राष्ट्र अमर रहता है।

(इ) हमारी समकालीन सामाजिकता निरंतर उस स्थिति की ओर बढ़ रही है जहाँ किसी चीज का उपयोगी होना ही उसका महत्वपूर्ण होना है।

2. निम्नलिखित गद्यांष से संबंद्ध प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

नैतिकता हमारे लिए सामाजिक मानदण्ड उपस्थित करती है क्योंकि यह उचित और अनुचित का ज्ञान कराती है। नैतिक नियमों में चरित्र–निर्माण की महत्ता पर जोर दिया जाता है और उन्हें मानने वाले कर्तव्य की भावना से प्रेरित होकर व्यवहार करते है। नैतिकता महज इसलिए नहीं मानी जाती कि पूर्वज भी ऐसा मानते आये है, बल्कि वह इसलिए मानी जाती है क्योंकि इसके पीछे न्याय, पवित्रता, औचित्य व दृढ़ता होती है नैतिकता आत्म–चेतना से प्रेरित होती है। रूढ़ियाँ तो तर्कपूर्ण नहीं होती, किन्तु नैतिकता के आधार मनुष्य के जीवन–मूल्य होते है जिनके अनुसार वे तर्कों के निर्माण कर लेते है। नैतिकता रूढ़ियों व जनरीतियों की अपेक्षा स्थायित्व लिए रहती है। नैतिकता का एक और अर्थ हो सकता है, जिसका संबंध एक समूह–विषिष्ट से होता है जैसे, डॉक्टरों की नैतिकता, प्राध्यापकों की नैतिकता आदि। उदाहरण के लिए, एक डॉक्टर की आचार–संहिता में यह होता है कि कोई भी रोगी चाहे वह गरीब हो या धनी, यदि वह आधी रात को भी उसके पास आता है तो वह उसका इलाज अवष्य करेगा। इस प्रकार नैतिकता आचार–षास्त्र के बहुत निकट है। नैतिकता सिद्धान्तों का समर्थन करता है। नैतिक सिद्धान्तों का परिपालन धर्म के भय के कारण होता है, क्योंकि बहुत से नीति नियमों की उत्पत्ति धर्म से बतलायी गयी है। भारत में कर्म, पुनर्जन्म एवं स्वर्ग–नरक की अवधारणाएँ धर्म द्वारा प्रतिपादित है। ये अवधारणाएँ सुव्यवस्थित सामाजिक व्यवस्था बनाये रखने में सहायक है। धर्म नैतिकता पर जोर देता है तथा इसका संबंध अलौकिक संसार से स्थापित करता है। यदि व्यक्ति नैतिकता का पालन नहीं करता है तो उसको अपराधी माना जाता है, जबकि धर्म का पालन न करने पर वह पाप का भागी बनता है। आवष्यकता नही कि सभी प्रकार के नैतिक व्यवहारों की प्रकृति धार्मिक हो, कई

नैतिकताएँ धर्म–निरपेक्ष भी होती है।

(अ) नैतिकता हमारे लिए आवश्यक क्यों है?

(ब) क्या नैतिकता का पालन केवल पूर्वजों के सम्मानार्थ किया जाता है?

(स) नैतिकता और रूढियों मे क्या अंतर है?

(द) नैतिकता आचार–शास्त्र के निकट कैसे है?

(इ) धर्म और नैतिकता में परस्पर क्या संबंध है?

3. निम्नलिखित गद्यावरण का संक्षेपण उसके एक–तिहाई शब्दों में करते हुए इसके लिए के सार्थक शीर्षक का चयन कीजिए:

सही प्रकार का समाजीकरण होने पर समाज के सदस्य सामाजिक नियमों के अनुरूप व्यवहार करते है। यदि गलत समाजीकरण हो जाता है तो विपथगामी व्यवहार में वृद्धि होती है। इसलिए समाजीकरण के दायित्व से संबंधित जो व्यक्ति होते है उन पर सामाजिक नियंत्रण का बहुत बड़ा उत्तरदायित्व होता है। बाँटामोर के अनुसार षिक्षा बच्चे के प्रारम्भिक समाजीकरण का सबसे दृढ़ आधार है। शैक्षिक व्यवस्था नैतिक विचारों को स्पष्ट करके और अंषतः व्यक्ति का बौद्धिक विकास करके सामाजिक नियमन में योगदान देती है। षिक्षा का उद्देष्य व्यक्ति को समाज की विभिन्न इकाइयों से परिचित करवाना है। षिक्षा का केवल सैद्धान्तिक महत्व ही नहीं, अपितु उसकी व्यावहारिक उपयोगिता भी है।

सामाजिक नियंत्रण के अन्य साधन जहाँ व्यक्ति को दबावपूर्ण ढंग से सामाजिक नियमों को मानने के लिए बाध्य करते है वहाँ षिक्षा उसे स्वतः आत्म विष्लेषण द्वारा अप्रभावात्मक ढंग से सामाजिक नियमों का पालन करने की प्रेरणा देती है। एक तो समाजीकरण, हमें करणीय व्यवहार की जानकारी कराता है, दूसरे विपथगामी व्यवहार की निन्दा की भी हमसे अपेक्षा रखता है। अतः करणीय व्यवहार के बीच संतुलन रखकर समाजीकरण, जो षिक्षा का एक भाग, समाज में सबसे बड़ी नियंत्रक शक्ति के रूप में कार्य करता है। कुछ वैसे वन–बालकों के उदाहरण मिलते हैं जिन्हें जंगल में भेड़ियों के पास रहना पड़ा अथवा समाज से दूर रहना पड़ा। इन बालकों को समाज के अनुकूल व्यवहार करना नहीं आता था वे पषुओं की तरह व्यवहार करते थे। कल्पना कीजिये कि संपूर्ण समाज में वैसे ही वन–बालक दिखाई देने लगे तो उस समाज में आदर्ष, मापदण्ड व रीति–रिवाज भी नहीं दिखाई देंगे। परिणाम यह होगा कि वहाँ लूट–पाट, मार–पीट की घटनाएँ अधिक होगी व सामाजिक नियंत्रण की आवष्यकता का तीव्रता से अनुभव होगा। अतः समाजीकरण हमें अव्यवस्था की अत्यंत विषय स्थिति से बचाकर सामान्य रूप से सामाजिक क्रियाओं के संचालन में सहायक होता है। परिणाम सामाजिक नियंत्रण बना रहता है। षिक्षा का सामाजिक नियंत्रण से दूसरा महत्वपूर्ण कार्य हमारे जीवन में ज्ञान का विकास करना है। जब हम में ज्ञान का विकास होगा तब हम इस स्थिति में होंगे कि अच्छे–बुरे, उचित–अनुचित की पहचान कर सके। जब हम उचित को अनुचित से अलग कर लेंगे तब हम अनुचित व्यवहार को जीवन से हटाा देंगे व उचित व्यवहार का प्रयोग करेंगे। उचित व्यवहार वही होगा जो सामाजिक मानदण्डों के अनुरूप है।

अतः हम ज्ञान के विकास के साथ उचित व्यवहार को समझेंगे व उसका पालन करेंगे, जिससे सामाजिक नियंत्रण स्वतः बना रहेगा। षिक्षा हमें तर्क प्रदान करती है तथा भावुक, अतार्किक एवं व्यक्तिपरक निर्णयों से मुक्त होने की प्रेरणा देती है। इसीलिए हम देखते है कि एक अषिक्षित व्यक्ति कठिन से कठिन परिस्थिति में धैर्यपूर्ण निर्णय लेकर अपने विवेक का परिचय देता है। संक्षेप में षिक्षा व्यक्ति को आत्म–नियंत्रण सिखाती है। चूंकि व्यक्ति समाज की इकाई है, अतः व्यक्ति के स्तर पर नियंत्रण रहने से सामाजिक नियंत्रण तो स्वतः हो जाता है।

4. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिएः

(अ) आँखो में धूल झोंकना (ब) दाँत खट्टे करना

(स) नौ दो ग्यारह होना (द) लोहा मानना

(इ) हथेली पर सरसों जमाना।

5. निम्नलिखित शब्दों के दो–दो समानार्थी शब्द लिखकर उनके अर्थ वाक्यों में प्रयोग द्वारा स्पष्ट कीजिएः

(अ) किनारा (ब) चन्द्रमा (स) युद्ध

(द) साँप (इ) हाथी।

6. निम्नलिखित शब्द युग्मों का अर्थ लिखिए और वाक्यों में उनके प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि उनका अंतर स्पष्ट हो जाये :

(अ) अंश–अंस (ब) अनल–अनिल (स) अपेक्षा–उपेक्षा

(द) कृति–कृती (इ) क्षति–क्षिति।

7. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिएः

(अ) लड़का ने पत्र लिखा।

(ब) मेरे को दफ्तर जाना है।

(स) कई सचिवालय के कर्मचारियों की गिरफ्तारी हुई।

(द) तब वे स्कूल में एक शिक्षक हुआ करते थे।

(इ) मैनें बाजार से दो किलो अमरूद और एक तरबूज खरीदे।